Chapter 8

हड़प्पा सभ्यता पर एक टिप्पणी

Kamlesh Nath, Department of History

Shri Jain Terapanthi College, Ranawas, Pali

सिंधु घाटी सभ्यता का समय काल लगभग 3300 ईसा पूर्व से 1300 ईसा पूर्व तक था जिसमें इसका परिपक्व काल 2600 ईसा पूर्व से 1900 ईसा पूर्व तक माना जाता है

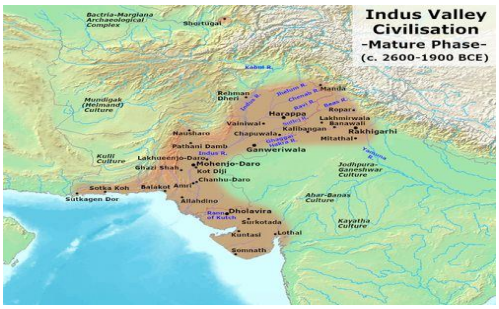

यह विश्व की प्राचीनतम सभ्यताओ में से एक है। सर्वप्रथम चार्ल्स मेसन ने 1826 ईस्वी में इस पर प्रकाश डाला एवं 1853 ईस्वी में अलेक्जेंडर कनिंघम ने हड़प्पा का सर्वे किया।

1856 ईस्वी में अलेक्जेंडर कनिंघम ने दूसरी बार हड़प्पा का सर्वे किया एवं 1861 ईस्वी में भारतीय पुरातत्व विभाग की स्थापना हुई इसलिए कनिंघम भारतीय पुरातत्व विभाग के जनक कहलाते है।

1921 ईस्वी में सर जॉन मार्शल ने दयाराम साहनी को हड़प्पा में उत्खनन करने हेतु नियुक्त किया।

1922 ईस्वी में राखालदास बनर्जी को मोहनजोदड़ो का उत्खनकर्ता नियुक्त किया।

1924 ईस्वी में सर जॉन मार्शल ने सिंधु घाटी सभ्यता या हड़प्पा सभ्यता की घोषणा की।

इतिहासकार पीग्गट ने हड़प्पा एवं मोहनजोदड़ो को सिंधु घाटी सभ्यता की जुड़वां राजधानी कहा है।

विस्तार

यह विश्व की सबसे बड़ी सभ्यता है तथा लगभग 13 लाख वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैली हुई है इसका विस्तार भारतए पाकिस्तानए अफगानिस्तान तक है। यह एक कांस्ययुगीन सभ्यता कही जा सकती है।

स्थल.

हड़प्पा

यह पाकिस्तान के पंजाब प्रांत में रावी नदी के तट पर स्थित है इसके उत्खननकर्ता दयाराम साहनी थे।

उत्खनन में निम्न मुख्य प्राप्तियां

आर 37 कब्रिस्तान

विदेशी की कब्र

इक्का गाड़ी

श्रृंगार पेटिका

स्वास्तिक का निशान

नदी के तट पर 12 अन्नागार मिलते है जो दो लाइनों में है।

अनाज साफ करने का चबूतरा मिलता है।

श्रमिक आवास भी मिलते है।

मोहनजोदड़ो

यह पाकिस्तान के सिंध प्रांत में सिंधु नदी के तट पर स्थित है इसका उत्खनन राखालदास बनर्जी ने किया।

मोहनजोदड़ो का शाब्दिक अर्थ मृतकों का टीला है इसके उत्खनन में निम्न मुख्य प्राप्तियां है

विशाल स्नानागार

इसके उतर एवं दक्षिण में सीढ़ियां बनी हुई है तथा इसमें बिटुमिनस का लेप किया गया है उतर दिशा में छह वस्त्र बदलने के कक्ष है।

विशाल अन्नागार

महाविद्यालय के साक्ष्य

सूती कपड़े के साक्ष्य

हाथी का कपालखंड

ISBN: 978-93-344-1269-7

नर्तकी की मूर्ति जो धातु की बनी हुई है यह नग्न है एवं एक हाथ में चूड़ियां पहन रखी है
पुरोहित राजा की मूर्ति जो ध्यान अवस्था में है इसने शॉल ओढ़ रखी है जिस पर कशीदाकारी का कार्य किया गया है
यहां से मेसोपोटामिया की मुहर मिलती है
पशुपति नाथ की मुहर मिलती है

लोथल

यह गुजरात में भोगवा नदी के किनारे स्थित एवं इसका उत्खनन सर रंगनाथ राव ने किया।
यह एक व्यापारिक नगर था।
उत्खनन से निम्न मुख्य प्राप्तियां
यहां से गोदीबाडा मिलता है जो सिंधु घाटी सभ्यता की सबसे बड़ी कृति है।
मनके बनाने का कारखाना।
चावल के साक्ष्य।
फारस की मुहर जो गोलाकार बटननुमा है।
घोड़े की मृण्मूर्तिया।
चक्की के दो पाट।
घरों के दरवाजे मुख्य मार्ग पर खुलते है जो कि एकमात्र ऐसा नगर है।
नावों के मॉडल।

धौलावीरा

यह गुजरात में स्थित है तथा इसका उत्खनन रविन्द्र सिंह बिष्ट द्वारा किया गया। यह शहर किसी नदी के किनारे स्थित नहीं है तथा यह शहर तीन भागों में विभाजित है।
मुख्य प्राप्तियांदृ
यहां से 16 कृत्रिम जलाशय मिलते है।
स्टेडियम के साक्ष्य मिलते है।
सूचना पट जो पॉलिशयुक्त है।
यह नवीनतम उत्खनित स्थल है वर्ष 2021 में धौलावीरा को भारत के 40 वे विश्व धरोहर स्थल के रूप में घोषित किया है।

चन्हूदड़ों

यह पाकिस्तान के सिंध प्रांत में स्थित है इसके उत्खननकर्ता मजूमदार थे जिनकी हत्या डाकुओं ने कर दी थी।
यह एक औद्योगिक नगरी थी। यहां से हमे मनके बनाने के कारखाने मिलते है तथा कुत्ते द्वारा बिली का पीछा करने के साक्ष्य भी प्राप्त हुए है।

कालीबंगा

यह एक पूर्व हड़प्पाकालीन स्थल है जो कि राजस्थान में स्थित है यहां से एक खोपड़ी प्राप्त हुई है जिसमें छह छेद किए गए थे अर्थात् इन लोगों को शल्य चिकित्सा का ज्ञान था।

नगर नियोजन.

यह विश्व की प्रथम नगरीय सभ्यता थी तथा अपनी विशिष्ट नगर नियोजन के लिए प्रसिद्ध है नगर दो भागों में बंटे हुए थे पूर्वी भाग एवं पश्चिमी भाग पूर्वी भाग में आवासीय भाग होता था एवं पश्चिमी भाग में हिस्सा दुर्गीकृत होता था ऊंचे टीले पर स्थित होता था। सड़के एक दूसरे को समकोण पर काटती थी तथा शहर ग्रिड पैटर्न पर बसे हुए होते थे घरों के दरवाजे मुख्य मार्ग पर नहीं खुलते थे इसका एक अपवाद मिलता है जो की है लोथल इन नगरों में उत्कृष्ट जल निकासी व्यवस्था होती थी एवं मुख्य मार्ग पर नालियों को साफ करने के लिए मेन होल होता था नालियों को ईटों से ढका जाता था सामान्यतः पक्की ईंटों का प्रयोग करते थे

सामाजिक स्थिति

मातृसतात्मक संयुक्त परिवार होते थे समाज संभवत चार भागों में विभाजित था पुरोहित वर्ग व्यापारी वर्ग किसान वर्ग श्रमिक वर्ग बड़ी मात्रा में मातृ देवी की मूर्तियां मिलती हैं तथा यह शांतिप्रिय लोग थे क्योंकि अत्यंत कम मात्रा में हथियार मिलते हैं पुरुष एवं महिलाएं श्रृंगार करते थे एवं जवाहरात पहनते थे लोग शाकाहारी व मांसाहारी थे अंतिम संस्कार की तीनों विधियों का प्रचलन था पूर्ण शवाधान आशिक शवाधान दाह संस्कार। यह आत्मा व पुनर्जन्म में विश्वास करते थे लोथल से तीन कालीबंगा से एक युग्मित शवाधान मिलता है।

धार्मिक स्थिति

प्राकृतिक बहुदेववाद में विश्वास करते थे तथा पुरुष एवं महिला देवताओ को पूजते थे इस काल में देवताओं की मूर्तिया मिलती है लेकिन मंदिर बनना आरंभ नहीं हुए थे यह अंधविश्वासी थे। ये जादूएटोनेएटोटके में विश्वास करते थे। बलि प्रथा में विश्वास करते थे तथा कालीबंगा से हवन कुंड भी मिलते हैं यह वृक्ष पूजा जल पूजा लिंग पूजा एवं योनि पूजा में विश्वास करते थे। इन्हें ध्यान एवं योग का ज्ञान था। मोहनजोदड़ो

ISBN: 978-93-344-1269-7

से एक मुहर मिलती हैं जिस पर आघ शिवा का चित्र मिलता है सर जॉन मार्शल ने इन्हें पशुपतिनाथ कहा है।

आर्थिक स्थिति

कृषि आधारित अर्थव्यवस्था थी एवं अधिशेष उत्पादन होता था जिन्हें बड़े बाजारों शहरों में बेचा जाता था गेहूं सरसों चना मटर रागी प्रमुख फसले थी इन्हें चावल एवं बाजरे का ज्ञान नहीं था लोथल से चावल के साक्ष्य मिलते है जो कि अपवाद स्वरूप कहे जा सकते हैं रंगपुर से चावल की भूसी मिलती हैं ।

शोर्टुगई अफगानिस्तान से नहरों के साक्ष्य मिलते हैं तथा धौलावीरा से जलाशय के साक्ष्य मिलते है।

ये पशुपालन भी करते थे गाय भैंस भेड़ बकरी खरगोश कुत्ता बिल्ली इनके प्रिय पशु थे ये ऊंट घोड़ा हाथी से परिचित नहीं थे । विदेशी व्यापार होता था। सारगौन अभिलेख में सिंधु घाटी सभ्यता को मेलुहा कहा गया है मेलुहा नाविको का देश है तथा मेलुहा हाजा पक्षी के लिए प्रसिद्ध है इसी सारगोन अभिलेख में कपास को सिंडन कहा गया है कपास की विश्व में प्रथम खेती भारत में हुई।

मुद्रा व्यवस्था का प्रचलन नहीं था वस्तु विनिमय होता था यह सोने और चांदी का प्रयोग करते थे लोहे से परिचित नहीं थे।

लिपि

इन्हें लिपि का ज्ञान था यह भाव चित्रात्मक लिपि थी यह दाएं से बाय लिखी जाती थी इसे गोमूत्र अक्षर लिपि भी कहा जाता है इसमें 375 से 400 भाव मिलते हैं। इसे अभी तक पढ़ा नहीं गया है।

मूर्तियां एवं मुहरे

यहां से तीन तरह की मूर्तियां मिलती हैं धातु की पत्थर की मिट्टी; टेराकोटा की तथा मोहनजोदड़ो से नर्तकी की मूर्ति मिलती है जो कि धातु की है।

मोहनजोदड़ो से पत्थर की पुरोहित राजा की मूर्ति मिलती है। ज्यादातर मोहरे शेलखड़ी की बनी हुई है एवं मुहर चौकोर हुआ करती थी

सिंधु घाटी सभ्यता के पतन के कारण

1. गार्डन चाइल्ड व मार्टीमर व्हीलर के अनुसार आर्यों का आक्रमण।
2. सर एस॰आर॰राव ए मार्शल व मैके अनुसार बाढ़।
3. सर जॉन मार्शल के अनुसार प्रशासनिक शिथिलता।
4. अमलानंद घोष के अनुसार जलवायु परिवर्तन।
5. यू॰ आर॰ कैनडी के अनुसार प्राकृतिक आपदा।
6. माधो स्वरूप वत्स के अनुसार नदियों ने अपना रुख बदल दिया।

निष्कर्षतः इतनी विशाल सभ्यता के पतन के लिए बहुत सारे कारण जिम्मेदार या उत्तरदाई रहे होंगे।